HISTORY

B.A.PART-II (Subs)

Paper-II (Mughal period)

Unit-I, (Empire Expansion of Akbar-2)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 57

"अकबर की दक्षिण विजय" (1593 से 1601)

बहमनी राज्य के विखण्डन के उपरान्त बने राज्यों- **खानदेश, अहमदनगर, बीजापुर एवं गोलकुंडा** को अकबर ने अपने अधीन करने के लिए 1591 में एक दूत मंडल को दक्षिण की ओर भेजा। मुगल सीमा के सर्वाधिक नजदीक होने के कारण खानदेश ने मुगल आधिपत्य को स्वीकार कर लिया । **खानदेश को दक्षिण भारत का प्रवेश द्वार भी माना जाता है।**

1593 में अकबर ने अहमदनगर पर आक्रमण हेतु अब्दुर्रहीम खान खाना एवं मुराद को दक्षिण भेजा। 1594 में यहां के शासक बुरहान उल मुल्क की मृत्यु के कारण अहमदनगर के किले का दायित्व बीजापुर के शासक 'आदिलशाह प्रथम की विधवा चांद बीबी पर आ

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

गया। चांद बीबी ने इब्राहिम के अल्पायु पुत्र बहादुरशाह, को सुल्तान घोषित किया एवं उसकी संरक्षिका बन गई। 1595 में हुए मुगल आक्रमण का इसने लगभग 4 महीने तक डटकर मुकाबला किया । अन्ततः दोनों पक्षों में 1596 में समझौता हो गया; सनझौते के अन्तर्गत 'बरार' मुगलों को सौंप दिया गया एवं बुरहानुलमुल्क के पोते बहादुर शाह को अहमदनगर के शासक के रूप में मान्यता प्रदान कर दी गई। कुछ दिन बाद चांद बीबी ने अपने को अहमद नगर प्रशासन से अलग कर लिया। वहां के सरदार ने संधि का उल्लंघन करते हुए बरार को पुनः प्राप्त करना चाहा। अकबर ने अबुल फजल के साथ मुराद को अहमदनगर पर आक्रमण के लिए भेजा । 1597 में मुराद की मृत्यु हो जाने के कारण अब्दुर्रहीम खानखाना एवं दनियाल का आक्रमण के लिए भेजा गया, स्वयं अकबर ने भी दक्षिण की ओर प्रस्थान किया । मुगल सेना ने 1599 में दौलताबाद एवं 1600 में अहमद नगर किले पर अधिकार कर लिया। चांदबीबी ने हत्या कर ली।

खानदेश की राजधानी बुरहानपुर पर स्वयं अकबर ने 1590 में आक्रमण किया, इस समय वह का शासक 'मीरन बहादुर था। इसने अपने को असीरगढ़' के किले में सुरक्षित कर दिया । अकबर ने असीरगढ के किले का घेराव कर उसके दरवाजे को 'सोने की चाभी'

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

से खोला। 21 दिसम्बर 1600 को मिरन बहादुर ने अकबर के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया, परन्तु अकबर ने अन्तिम रूप से इस दुर्ग को अपने कब्जे में 6 जनवरी 1601 को किया। असीरगढ़ की विजय अकबर की अन्तिम विजय थी।

अकबर ने बरार, अहमदनगर एवं खानदेश की सुबेदारी शहजादा दनियाल को प्रदान कर दी। बीजापुर एवं गोलकुण्डा पर अकबर अधिकार नहीं कर सका । अकबर ने सम्राट की उपाधि दक्षिण को जीतने के बाद ही ग्रहण की।

इस तरह अकबर का साम्राज्य कंधार एवं काबुल से लेकर बंगाल तक और कश्मीर से लेकर बरार तक फैला था।

अकबर के समय में हुए महत्वपूर्ण विद्रोह:-

(1) उजबेगो का विद्रोह:- उजबेग वर्ग पुराने अमीर थे। इस वर्ग के प्रमुख विद्रोही नेता थे जौनपुर के सरदार खान जमान, उसका भाई बहादुर खां एवं चाचा इब्राहीम खां, मालवा का सुबेदार अब्दुल्ला खां, अवध का सूबेदार खाने आलम आदि। ये सभी विद्रोही सरदार अकबर की अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थे। 1564 में मालवा के अब्दुल्ला खान ने विद्रोह किया तथा 1565 में जौनपुर के खान

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

जमान एवं उसके भाई बहादुर खां में विद्रोह किया । इन विद्रोहों को अकबर ने सरलता से दबा दिया।

(2) मिजो वर्ग का विद्रोह:- मिर्जा वर्ग के लोग अकबर के सरदार थे। इस वर्ग के प्रमुख विदोही नेता थे इब्राहिम मिर्जा, मुहम्मद हुसैन मिर्जा, मसूद हुसैन, सिकन्दर मिर्जा एवं महमूद मिर्जा आदि । चूंकि इस वर्ग का अकबर से खून का रिश्ता था इसलिए ये अधिक अधिकार की अपेक्षा करते थे. इसी से उपजे असन्तोष के कारण इस वर्ग ने विद्रोह किया। अकबर ने 1573 तक मिर्जाओ के विद्रोह को पूर्ण रूप से कुचल दिया ।

(3) बंगाल एवं बिहार में हुए विद्रोह:- 1580 में बंगाल में बाबा खां काकशल एवं बिहार में मुहम्मद मासूम काबुली एवं अरब बहादुर ने विद्रोह किया। राजा टोडर मल के नेतृत्व में अकबर की सेना ने 1581 में इस विद्रोह को कुचला।

(4) अफगान बलूचियों का विद्रोह - अकबर के कश्मीर अभियान के समय 1585 में पश्चिमी सीमा पर अफगानों एवं बलूचियों ने विद्रोह कर दिया. इसी विद्रोह में बीरबल की हत्या कर दी गई । राजा टोडर मल एवं मानसिंह ने इस विद्रोह को कुचला ।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

(5) शहजादा सलीम का विद्रोह-अकबर के लाड-प्यार में सलीम काफी बिगड़ चुका था । वह बादशाह बनने के लिए उत्सुक था। 1599 में सलीम बिना अकबर की आज्ञा के अजमेर से इलाहाबाद चला गया । वहां पर उसने स्वतन्त्र शासक की तरह व्यवहार शुरू किया। 1602 में अकबर ने सलीम को समझाने का प्रयत्न किया। उसने दक्षिण से अबुल फजल को सलीम को समझाने के लिए बुलवाया । रास्ते में जहांगीर के निर्देश पर ओरछा के बुन्दल सरदार वीर सिंह देव ने अबुल फजल की हत्या कर दी। नि:सन्देह जहाँगीर का यह कार्य अकबर के लिए असहनीय था, फिर भी अकबर ने सलीम के आगरा वापस लौट कर (1603) माफी मांग लेने पर माफ कर दिया । अकबर ने उसे मेवाड़ जीतने के लिए भेजा पर वह मेवाड़ न जाकर पुनः इलाहाबाद पहुंच गया । कुछ दिन तक सुरा और सुन्दरी में डूबे रहने के बाद अपनी दादी की मृत्यु पर सलीम 1604 में वापस आगरा गया। जहां अकबर ने उसे एक बार फिर माफ कर दिया । इसके बाद सलीम ने विद्रोहात्मक रुख नहीं अपनाया। इस तरह अकबर को अपने शासन काल में हुए सभी विद्रोही को कुचलने में सफलता प्राप्त हुई।

21 अक्टूबर 1605 को अतिसार रोग के कारण अकबर की स्थिति काफी गंभीर हो गई । 25-26 अक्टूबर 1605 की अर्थरात्रि को

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

अकबर की मृत्यु हो गई । अकबर को बौद्ध प्रभाव से प्रभावित सिकंदरा के मकबरे में दफनाया गया।

धन्यवाद

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)